International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-07-2021, Accepted: 06-08-2021, Published: 21-08-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 101-106

अरविंद आडिंग कृत “दि व्हाइट टाइगर” उपन्यास की प्रासंगिकता

Dr. Beauti Das
Assistant Professor, Department of Hindi, Rangapara College, Assam, India

सारांश

अरविंद आडिंग कृत “दि व्हाइट टाइगर” एक आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास की कोटी के उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्र बलराम हालवाई को उपन्यासकार ने एक निष्ठावान नौकर, बुद्धिमान, चिंतक, हत्यारा और एक उद्यमी व्यवसायी के रूप में प्रक्षेपण किया है। पूरी उपन्यास की कथा संरचना प्रत्यावर्तन शैली के माध्यम से उपस्थापन किया गया है। अंधेरी गलियों में जीवन व्यतीत करनेवाला बलराम के जीवन संघर्ष की त्रासद स्थिति, उससे उबरने के लिए उसकी निरंतर आंतरिक अंतर्द्वंद्व, गरीबी की कैद से मुक्ति की मार्ग का स्वप्ना और अंततः अनैतिक कार्य से सफलता की शिखर पर पहुँच जाने की कथा यहाँ वर्णित है। इस उपन्यास में दो किस्म के भारत की कथा वर्णित है; एक अंधेरेपन और दूसरा प्रकाश की। दुर्भाग्य से बलराम भारत के ग्रामीण इलाके की अंधेरी गली में जन्मे एक बालक की कथा है जिसके पिता एक रिक्सा चालक है जो उसकी ग्यारह साल की उम्र होते होते इस संसार से विदा हो जाते है और माता बचपन में ही चल बसती है और उनकी परवरिश का दायित्व दादी के कंधे पर आ जाते है। साधारणतः व्यक्ति जीवन की मुल्य समाज में पले श्रेणी विभाजन के आधार पर ही निर्धारित होती है,इस यथार्थता से वाकिफ बलराम इसीलिए हर पल उसके आखों में अमीर बनने की जुनून छा जाता है और इस “rooster coop” से हमेशा के लिए आजाद होना चाहते है और इस चाहत में ईमानदार बलराम समय के बदलते परिवेश में एक नए बलराम में परिवर्तित हो जाते है। मालिक लोगों का नौकर के प्रति रवैया, जीवनभर की सेवा-भाव का अवांछित प्रताड़ना से क्षुब्द बलराम एक प्रतिशोधी अश्वत्थामा में बदल जाते है। मेरी शोध पत्र का उद्देश्य अरविंद आडिंग कृत “दि व्हाइट टाइगर” उपन्यास की प्रासंगिकता पर विचार करना।

मूलशब्द: आंतरिक अंतर्द्वंद्व, “rooster coop”, Entrepreneur, प्रत्यावर्तन शैली, प्रतिशोधी अश्वत्थामा, भारतीय संस्कृति, विजातीय संस्कृति।

प्रस्तावना

अरविंद आडिंग द्वारा विरचित प्रस्तुत उपन्यास के केंद्रीय पात्र बलराम एक जीवंत पात्र है। बलराम के संघर्ष, अंतर्द्वंद्व, उलझन, आर्थिक अनातन दराचलतः समाज जीवन के निम्न श्रेणी में निवास करनेवाले लोगों के जीवन से पूर्णतया साम्य है, निकट है और भली भांति परिचित भी है। ऐसे लोग अभाव में जीते है और अभाव में ही अपना दम तोड़ देते है, मानो यही भाग्य की विडम्बना है, ईश्वर की देन या इनाम है। ईश्वर की इस अभिशाप को वरदान स्वरूप हँसते हँसते ग्रहण करने के लिए विवश, लाचार है। स्वंय ये लोग खिलौने बन चुके है। विधाता, प्रकृति इन्ही के

साथ खेलते है। अरविंद आडिंग कृत “दि व्हाइट टाइगर” उपन्यास मेँ दिखाये गए पात्र बलराम कोई दूसरा इंसान नहीं बल्कि इसी श्रेणी का ही प्रतिनिधित्व करनेवाला एक साधारण युवक है। लेकिन बलराम और इस श्रेणी के लोगों के बीच एक खास अंतर यह है कि इन लोगों की तरह बलराम विकत परिस्थितियों के सामने झुकना नहीं चाहते, निरंतर संघर्ष करते हुये सूरज के सातवे घोड़े के समान अंधकार को चीरकर प्रकाश की ओर कदम बढ़ाने के अडिंग प्रयास करते है। पिंजरे मेँ आवद्ध पक्षी जिस प्रकार से स्वंय को चारों ओर से बाहर निकलने के मार्ग अवरुद्ध जानकर और कही पंख आहत न हो जाए ये सोचकर फड़फड़ाना तक भूल जाते है तथा निश्चित पराजय स्वीकार कर लेते है ठीक उसी प्रकार इस श्रेणी के लोग भी नियति के सामने सारे शक्ति खोकर जीवन के साथ एक प्रकार से समझौता कर लेते है। लेकिन बलराम के भीतर सोये हुये बलराम ने कभी उसको चैन की नींद नहीं लेने दिया, उसकी जागरूक चेतना कभी नियति के सामने झुकने नहीं दिया, गरीबी से कभी समझौता करने नहीं सिखाया और यही भीष्म प्रतिज्ञा उसको दुष्प्राप्य “सफ़ेद बाघ” मेँ परिवर्तित करते है जो हजारों वर्षों मेँ कभी एक पैदा होते है।

उपन्यास की कथा संरचना प्रत्यावर्तन शैली के माध्यम से उपस्थापन किया गया है। एक सफल Entrepreneur की जीवन यात्रा की उतार चढ़ाव भरी जीवन की कटु वास्तवविकता की आख्यान यहाँ प्रस्तुत है। आज वह इंसान उस मुकाम पर पहुँच गया है कि किसी के सामने उसका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है, उसका नाम ही उसके सम्पूर्ण परिचय की इतिहास बतलाता है। चीन के प्रधान मंत्री भारतवर्ष के दौड़े पर आ रहे है यह जानने के लिए कि दक्षिण भारत के बैंगलोर शहर विज्ञान और प्रयुक्ति विद्या और Entrepreneur के क्षेत्र मेँ निरंतर कैसे विकास कर रहे है तथा भारतवर्ष के एक यथार्थ तस्वीर से परिचित होने के लिए। यह खबर all India Radio के माध्यम से मिलते ही वह संख्स चीन के प्रधान मंत्री से संपर्क करते है और एक अर्जी पेश करते है कि अगर आपको भारतवर्ष की असली तस्वीर की खोज करनी है तो आप मुझसे मिलिये। सदियों से लोगों के हृदय में बसे पवित्र गंगा मैया की असली स्वरूप सागर के किनारे बैठकर नहीं पायी जाती। मैं आप को वास्तविक भारतवर्ष से परिचित करूंगा। दुनिया के नजर मेँ दिखाई देनेवाले भारतवर्ष मेँ किस प्रकार की दो किसम की दुनिया बसा हुआ है इस से आप को रुवरू करूंगा। ये संख्स और कई नहीं, प्रस्तुत उपन्यास के प्रमुख पात्र बलराम हलवाई ही है जो एक सामान्य लक्ष्मणगढ़ के चाय बेचनेवाले लड़के की जीवन संघर्ष की गाथा के साथ-साथ एक प्रख्यात Entrepreneur बन जाने की कथा निहित है।

उपन्यास की प्रारम्भिक कथा संरचना मेँ उपन्यासकार की प्रतिभा और कला अभिव्यक्ति की सुंदर निदर्शन प्रस्फुटित हुआ है। नाटकीय शैली मेँ प्रक्षेपित इस उपन्यास की कथा बलराम हलवाई की निजी जीवन की संघर्षमय जीवन गाथा से संबन्धित है। इसलिए उसकी संघर्ष पाठक, श्रोता, आम जनता के अत्याधिक नजदीक है, करीब है। बलराम पात्र हमारे बीच का ही एक परिचित पात्र के रूप मेँ सामने उपस्थित है। पत्र शैली के माध्यम से अभिव्यक्त उपन्यास की कथा मेँ एक प्रकार जीवंतता, प्राणवत्ता का उन्मेष हुआ है। कथासार के प्रारम्भ मेँ बलराम हलवाई चीन के प्रधान मंत्री को लिखे हुये पत्र मेँ उल्लेख करते है कि बैंगलोर शहर Entrepreneur के क्षेत्र मेँ तेज़ गति से विकास कर रहे हैं इसकी जानकारी के लिए आपको पाश्चात्य की किताबे पढ़ने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अतीत हो चुका है। अगर इसकी सही जानकारी लेना है तो आप मुझे चुनिए क्योंकि मेरा सम्बंध आनेवाले भविष्य से है। मैं

वह वास्तविक पात्र हूँ, निजी अभिज्ञता से पूर्ण स्वंय उस किताब की एक-एक पृष्ठा हूँ। एक साधारण जीवन व्यतीत करनेवाला वह छोटा सा बालक समय के प्रवाह में ठोकर खा-खाकर वर्तमान की स्थिति में पहुचनेवाला एक सफल Entrepreneur हूँ।

> "Don't waste your money on those American books.
> They are so Yesterday. I am tomorrow. In terms of formal education I may be somewhat lacking. I never finished school, to put it bluntly who cares ! I haven't read many books but I've read all the ones that count. I know by heart the works of the four greatest poets of all time Rumi, Iqbal, Mirza Galib, and a fourth fellow whose name I forget. I am a self-taught entrepreneur."[Ref(1)-Pp-6]

उपन्यासकार अरविंद आडिंग कृत "दि व्हाइट टाइगर" में समाज में अवहेलित, उपेक्षित, निर्वल, निर्धन लोगों की दुख, दर्द, पीड़ा, कराह, वेदना, कष्ट, आर्थिक दैन्यता को वाणी देने की कोशिश हुआ है। समाज में धनी वर्ग का निर्धन वर्ग के प्रति दुर्व्यवहार, अत्याचार, शोषण का एक सुंदर चित्रण यहा उपस्थापन हुआ है। ग्राम्य समाज और शहरी समाज में निहित अंतर का यथातथ्य वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में अभिव्यंजित हुआ है। सही मायने में भारतीय संस्कृति की सही झलक ग्राम्य जीवन के परिवेश में ही देखने को मिलता है। आज आधुनिक नगरीय सभ्यता में विजातीय संस्कृति की समावेश ने हमारी मूलभूत संस्कृति के विनाश का कारक बन गया है। बलराम हलवाई लक्ष्मणगढ़ के ग्रामीण परिवेश में रहनेवाला एक साधारण युवक है जो बचपन से ही गरीबी को देखा है, गरीबी में ही जिया है। सुविधा के नाम पर एक भी चीज को प्राप्त न करनेवाले इलाके के बाशिंदा है। ये निर्धन ग्रामीण लोग स्वप्ने देखना भूल चुके है क्योकि भलीभाँति जानते है कि उनके स्वप्ने कभी पूर्ण नहीं होंगे, इस "rooster coop" से कभी बाहर ही नहीं निकल पाएंगे। सदियों से इनपर निरंतर शोषण होता आया है। आज देश प्रगति के राह पर है, विश्व की अर्थव्यवस्था में काफी परिवर्तन हो चुका है परंतु इन लोगों की स्थिति ज्यों का त्यों बना हुआ है परंतु गरीब वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला बलराम हलवाई हालत से, गरीबी से, शोषक समाज से समझौता करनेवाला युवक नहीं है। वह तेज़ है, दूरदर्शी है, बुद्धिमान है, किसी न किसी प्रकार इस अंधकार भरी दुनिया से दूर भाग कर रोशनी की शहर में, प्रकाश की दुनिया में हर हाल में जाना चाहता है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करना चाहता है इसलिए तो वह जीवन की प्रारम्भिक स्थिति में लक्ष्मणगढ़ के किसी एक चाय के दुकान में काम भी करते है और वहाँ से ही उसको पता चलता है कि ड्राईवर के कार्य में अच्छे तंखा मिल जाते है। समय की बर्बादी न करते हुये वह निकल पड़ते धनबाद के अमीर व्यवसायी स्टोर्क के घर ड्राईवर और घरेलू काम-काज की तलाश में। व्यवसायी स्टोर्क उसके घर के ड्राईवर के रूप में बलराम को रख लेते है क्योंकि अमेरिका में रहनेवाले स्टोर्क के पुत्र अशोक और उसके विलासी पत्नी पिंकी उन दिनों धनबाद में ही कुछ दिनों के लिए आए हुये थे। एक अलग दुनिया, नयी रोशनी भरी शहर में, भिन्न रंगी प्रकाश से भरी घर में बलराम का प्रवेश होता है। वह बड़ी निष्ठा से, ईमानदारी से उस घर में सौपे गए सभी कार्य का निर्वाह करने लगे। समय बीतता गया, नए परिवेश में बलराम भी जितना हो सके अपने को ढलने की कोशिश करने लगे। अशोक की पत्नी भिन्न संस्कृति के हुये हेतु उसकी जीवन शैली, रहन-सहन काफी अलग है। देर रात तक पार्टी में रहना, शराब पीना, डांस करना ये सभी कार्य पिंकी के लिए बहुत ही सामान्य है। दूसरी ओर पिंकी कभी हमारी संस्कृति को अपना भी नहीं पायी। पाश्चात्य संस्कृति में पली-बढ़ी पिंकी कभी अपने

को परिवर्तित नहीं कर सकी और पत्नी की संस्कृति को अपनाकर अशोक भी उशृंखल जीवन व्यतीत करने मेँ ही अपनी जीवन की सार्थकता, झूठी पूर्णता का अनुभव करने लगे। व्यावसायिक कर भुगतान के सिलसिले मेँ एक दिन अशोक पिंकी और बलराम गुड़गाव की ओर चल पड़ते है। उन्ही दिनों नसे की स्थिति मेँ पिंकी अचानक एक सड़क दुर्घटना कर देती है और पिंकी द्वारा हुये उस घटना ने अशोक और उनके घर के लोगों को काफी विचलित करते है। इस हादसे से बचने के लिए अशोक के घर के सभी लोग बलराम से प्रस्ताव रखते है कि इस दुर्घटना का दायित्व बलराम अपने सिर पर ले और वकालत नामा पर हस्ताक्षर कर मालिक की रक्षा करे। इस प्रस्ताव ने बलराम को गहरी रूप से प्रभावित ही नहीं किए बल्कि मानसिक तौड़ पर झकझोड़ कर रख देते है। मालिक पक्ष की हृदयहीनता, स्वार्थी मानसिकता के विषय पर बार-बार बलराम के मन मेँ सवाल उठने लगे। जीवन भर की निस्वार्थ भाव से सेवा करने का इनाम इसी रूप मेँ आएगा इसका अंदाजा उसे नहीं था।

> "The jails of Delhi are full of drivers who are there behind bars because they are taking the blame for their good solid middle-class masters. We have left the village, the masters still own us, body, soul and arse".[Ref(1)-Pp-169]

तीन महीने के समय लेकर अपने स्वदेश लौटे अशोक यहा आकर नयी भारतवर्ष की प्रगति देखकर गुड़गाव मेँ रहने का ही मन बैठा लेता है। ये जानकर पिंकी बिना बताये अमेरिका चल देती है। अपनी पत्नी से बेहद प्रेम करनेवाले अशोक पिंकी की इस धोखे से वह पूरी तरह टूट जाते है, जिंदेगी बिलकुल अस्त-व्यस्त हो जाने लगे, जिंदेगी किसी धुंधली सी चित्र की भांति चलने लगे। मधुशाला मेँ ही अतृप्त जीवन की पूर्ण मादकता ढूँढने लगे, इसीके चलते न जाने वह पहले से और कितने बिगड़ चुके है। पिंकी की अनुपस्थिति को भूलने के लिए अशोक अपनी पूर्व प्रेमिका उमा से भी संपर्क कर उसके साथ अनैतिक, अवैध संपर्क निभाने लगे। अशोक की इस उशृंखल जीवन की एकमात्र साक्षी ड्राईवर बलराम नौकर की सीमा का ख्याल रखकर किसी प्रकार मौन होकर सबकुछ देखते रहे, सहते रहे।

अमीर लोगों के साथ उठ-बैठ कर बलराम को ये एहसास पक्का हो गया कि जिंदेगी मेँ पैसों की क्या अहमियत है, पैसे जिंदेगी को ही बदल देते है, वही पूरी सिस्टम को परिचालित करते है, जिसके पास पैसे है वह अपनी भाग्य को भी बदल सकते है, नियति को चुनौती दे सकते है, किया हुआ हर अपराध को तले जा सकते है, पैसे से इंसान को, सम्मान को खरीदा जा सकता है; अन्याय को न्याय के रूप मेँ परिवर्तित किया जा सकता है। ईमानदार बलराम के चिंतन को समय ने कब परिवर्तन कर दिया इसका अंदाजा खुद बलराम को नहीं हुआ न आज हुआ है। वह इतना ही समझा कि धोखा उसके साथ हुआ है और उन्होने धोखे से ही उसका जवाब दिया। ये उचित है क्योंकि हर एक इंसान के भीतर प्रतिशोधी अश्वत्थामा जीवित है। अपने किए हुये कर्म पर कई पश्चाताप न करते हुये बेरहमी से अपनी मालिक अशोक की हत्या कर किसी एक "कर अधिकारी" को रिश्वत देने के लिए अपनी गाड़ी मेँ रखे हुए ७ करोड़ रुपए लेकर वह फरार हो जाते है और बेंगलोर शहर मेँ एक नए परिचय के साथ, नयी जिंदेगी की शुरुवात कर वह एक प्रतिष्ठित Entrepreneur बन जाते है। अब दुनिया उनके कदमों पर है; आज अपनी जिंदेगी की हर चाहत को, इच्छा को, स्वप्ने को वह पूर्णता देने मेँ सक्षम है। अंधेरी गली की वह बालक आज उजाले की दुनिया का प्रकाश स्तम्भ है। "rooster coop" से कभी बाहर न निकल पाये उस वर्ग के लोगों की ताकत, ऊर्जा, प्रेरणा का प्रतीक बलराम स्वंय मानो

दुष्प्राप्य सफ़ेद बाघ हो जो हजारों वर्षो में कोई एक ही पैदा होते है। अपनी जीवन यात्रा के हर पड़ाव, हर संघर्ष को बलराम पत्र शैली के माध्यम से चीन के प्रधान मंत्री को अवगत कराते हैं। जिंदेगी के हर चुनौतियों को अतिक्रमण कर वर्तमान की स्थिति में पहुंचने वाले बलराम का जीवन किसी चलचित्र से कम नहीं है। वह प्रधान मंत्री से पत्र के माध्यम से आग्रह व्यक्त करते है कि मेरी जीवन यात्रा की कहानी ही किसी अपंग पौधे प्रकृति से जूझते जूझते मानो समय पर एक वटवृक्ष का रूप लेनेवाले पेड़ के समान है। मैं भोगनेवाले यथार्थ का जीवंत पात्र हूँ, वास्तविक इतिहास का निर्माता हूँ। मैं ही साधारण ड्राईवर बलराम से परिवर्तित वह बेंगलोर के प्रख्यात Entrepreneur हूँ जिसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए आप भारतवर्ष की दौरे के लिए आ रहे है।

निष्कर्ष

अरविंद आडिंग कृत “दि व्हाइट टाइगर” उपन्यास शोषक और शोषित समाज के बीच में पनपते हुये आंतरिक संघर्ष का एक जीवंत दस्तावेज़ है। ये जाहिर सी बात है कि सामाजिक श्रेणी विभाजन आर्थ-सामाजिक व्यवस्था को असंतुलित बनाते है,व्यक्ति जीवन की वैचारिक चिंतन प्रणाली में अंतर लाते है साथ ही शोषित श्रेणी में क्रांति की भावना को, ईर्ष्या की भावना को, अस्मिता की भावना को प्रज्वलित करते है। अपनी अस्मिता को हर कोई इंसान सुरक्षित देखना चाहते है और जब कोई अपनी अस्तित्व की संकट अनुभव करते है तो वह उससे उबरने के लिए किसी भी हद तक जा सकते है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र बलराम भी इस मानसिकता का शिकार हुआ है। जीवन भर की कठोर परिश्रम, सेवा भाव, निष्ठा का इनाम जब मालिक द्वारा एक ही क्षण में धोखे में परिवर्तित होता है तो बलराम को एहसास हो जाता है कि मालिक के लिए उसके नौकर हमेशा नौकर ही है, सिर्फ एक खिलौने है; कभी भी नौकर मालिक के दिल में जगह नहीं बना पाते है। जिंदेगी भर मालिक की सुख-सुविधा का ख्याल रखनेवाले नौकर की जिंदेगी से उनका कोई ताल्लुकात ही नहीं है मानो नौकर की जिंदेगी का कोई मुल्य नहीं; वह हर परिस्थिति, हर हालत में दुख-कष्ट से समझौता करने के लिए ही पैदा हुये है। मेरे ये शोध कार्य अधूरेपन में ही रह जाएंगे इसका जिक्र अगर मैं न करू तो अन्याय के पथ को अपनाकर प्रख्यात Entrepreneur तक पहुचनेवाले बलराम जिंदेगी में वह अपने किए हुये कार्य पर इसलिए कभी भी पश्चाताप नहीं करते। अपने निजी अनुभव से बलराम को पता चला कि दुनिया धोखेदारी से ही चलते है इसीलिए सत-असत की भावना से परे वह अभी केवल अपने आखों में देखे हुये अधूरे स्वपने को हर हाल में पूर्ण करने के जुनून में जुटे हुए है। आज के आधुनिक युग में ऐसा कौन युवा बलराम नहीं है जो इस मनोग्रंथि का शिकार नहीं हुये है?, आसान मार्ग से प्राप्त धन के पीछे हर कोई दौड़ रहा है। जिंदेगी एक दौड़ है, एक प्रतियोगिता है, हर कोई कम समय में अपने लक्ष्य स्थान पर पहुचना चाहते है चाहे वह मार्ग छल-कपट, अन्याय से ही क्यों न हो। आज ज़्यादातर लोगों की मानसिकता बलराम जैसे पात्र की मानसिकता से साम्य है। आज हजारों-लाखों प्रतिशोधी बलराम समाज जीवन में पैदा हुए है, हमारे बीच है जो स्वंय को प्रख्यात बनाने के चक्कर में लगा हुआ है। समाज जीवन में ही व्यक्ति के जीवन मुल्य निर्धारित होती है। सदियों से शोषक वर्ग का अन्याय, अत्याचार, शोषण समाज जीवन की ढाँचे को विपन्नापन्न बना रहे है। एक स्वस्थ और संतुलित समाज जीवन के लिए अशोक जैसे शोषक लोगों की मानसिकता और शोषित प्रतिशोधी जैसे बलराम की मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है, ये प्रसंगानुकूल है साथ ही समय की आह्वान है।

संदर्भ

1. Adiga A. The White Tiger Harper Collins; New Delhi, 2008.
2. Sharma J. Cultural Encounters in Aravind Adiga's The White Tiger: Contemporary Literary Review India, | eISSN2394-6075 | CLRI, 2019, 6(2).
3. Desweb Prateek. A Critical Analysis of Aravind Adiga's The White Tiger: A Socio- Political Perspective Language in India. ISSN1930-2940,2014:14:12.
4. Gurwara Simmi. "Aravind Adiga's The White Tiger: "A Study in Social Criticism".
5. Walmiki Shashikala. "Aravind Adiga's The White Tiger: A Portrait of Modern India". Asian Journal of Multi-Disciplinary Studies, 2014, 3(2).
6. Singh Krishna. "Aravind Adiga's The White Tiger: the Voice of the Under Class….. A Post-Colonial Dialectics. Journal of Literature, Culture and Media Studies. Vol. iv Issue x, October, 2017
7. Shenoy S Anupama. "Balrama Halwi and the White Tiger: Aravind Adiga's tribute to the Aspirational Indian of Present Times". IJELLH, 2017, 4(10).
8. Adiga A. The Sunday Times of India, New Delhi, 2008.

९ए Matz J. The Modern Novel: A short Introduction. Blackwell Publishing: New Delhi, 2004.